1857 की राजक्रांति और हिन्दी नवजागरण

कर्मेन्दु शिशिर

1857 की राजक्रांति और हिन्दी नवजागरण

हिन्दी नवजागरण और सन् 1857 के रिश्तों को लेकर बहुत गंभीर विवाद उठाया जाता रहा है। जरूरत इस बात की है कि इस पर बिना किसी पूर्वाग्रह के विचार किया जाना चाहिए। लेकिन इस पर विचार करने की प्राथमिक बात यह है कि आखिर नवजागरण को हम किस नजरिये से देखें? हमारे देखने का मकसद क्या हो क्योंकि इसी से हमारे नजरिये का निर्धारण होता है। डॉ. रामविलास शर्मा ने भारतेंदु और उनके सहयोगियों के लेखन पर विचार करते हुए हिंदी नवजागरण का नाभि-नाल रिश्ता 1857 से जोड़ा है। उन्होंने भारतेंदु युग के साहित्य में दुर्भिक्ष, महामारी, लूट और ऐसे ही अन्य संदर्भों से जुड़े उद्धरणों तथा भारतेंदु के एक पद में मात्र दो पंक्तियों के उल्लेख से इसको सिद्ध करने की कोशिश की है।

कठिन सिपाही द्रोह अनल, जो जलबल नासी।
जिन भय सिर न हिलाइ सकत कहुं भारतवासी।।

सच पूछिए तो 1857 के आसंग में ये दो पंक्तियां भी भारतेंदु की *विजयी-विजय-पताका* नामक उस कविता की हैं, जो 1882 में मिस्र पर ब्रिटिश सत्ता के विजय पर काशी में आयोजित जश्न के मौके पर पढ़ी गई थी। इनका अर्थ 1857 के पक्ष में नहीं, ब्रिटिश सत्ता के समर्थन में ही है। जब साक्ष्य हैं ही नहीं, तो कहां से कोई उद्धृत करेगा? उनके लिए साक्ष्य अपर्याप्त थे, इसलिए उसी आधार पर भारतेंदु युग को 1857 से जोड़ने का निर्णय उचित नहीं माना जा सकता।

नवजागरणकालीन पत्र-पत्रिकाओं को काम करते हुए मैंने पाया कि प्रेस-एक्ट को लेकर विपुल सामग्री उपलब्ध है। गो-बध के विरुद्ध आंदोलन को नवजागरण का प्रमुख आंदोलन सिद्ध करने वाले विचारकों की संकीर्णता यह रही कि उससे ज्यादा प्रेस-एक्ट पर सामग्री की मौजूदगी के बावजूद उन्होंने इसे नवजागरण का मुद्दा माना ही नहीं। ऐसा मानने पर ऐसे विचारकों का सारा खेल ही बिगड़ जाता। गौर से उस काल की पत्र-पत्रिकाओं को देखते ही यह बात स्पष्ट हो जाती है कि टूटी-फूटी भाषा, साधनहीनता और तमाम तरह की प्रतिकूलताओं के बीच, तब पत्रकारिता का दायित्व निर्वाह कितना दुष्कर रहा होगा! उस पर जबर्दस्त अंकुश! प्रेस-एक्ट के आतंक से सारे संपादकों के भीतर स्थायी कंपकंपी थी। 1857 में जिस क्रूरता और मानवता को लज्जित करने वाली तालिबानी दमनात्मक कार्रवाई का अंग्रेजों ने मुजाहिरा किया, उसे अपने देश के ही लोगों से छुपाने के लिए उसने अनेक तरह के झूठ फैलाए थे-यह जानकर आश्चर्य होता है। लेकिन इससे भी ज्यादा आश्चर्य इस बात पर होता है कि साम्राज्यवादी किस तरह से वामपंथ और दलित-विमर्श की खोल में आज भी वैचारिक स्तर पर पूरी तरह सक्रिय हैं।

अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबंध की शुरुआत तभी कर दी थी, जब भारत में पत्र छपने शुरू हुए थे। उनकी पहली टकराहट सीमित स्तर पर, उदार रहे अंग्रेजों से ही हुई थी। वारेन हेस्टिंग्स के साथ *बंगाल गजट* के संपादक हिन्की, कार्नवालिस के साथ *इंडियन वर्ल्ड* के संपादक डॉने तथा लार्ड बेलेजली के साथ *बंगाल-किरकारू* के संपादक चार्ल्स मैकलीन का संघर्ष हो चुका था। समय-समय पर इसमें संशोधन करके और कठोरता बरती गई थी। भारतेंदु के *कविवचनसुधा* के पूर्व प्रकाशित भारतीय पत्रों की संख्या 25 थी। जाहिर था ये सारे पत्र राजनीतिक नहीं थे, मगर नवजागरण की पृष्ठभूमि तैयार करने में किसी न किसी रूप में उनकी जरूरी भूमिका रही।

ऐसी बात नहीं थी कि अंग्रेज संपादक भारतीय जनता की ओर से कोई क्रांतिकारी आवाज बन रहे थे। अपवादों को हटा दिया जाए तो दीठ-अदीठ सारे के सारे अंग्रेज लेखकों, पत्रकारों, विचारकों की कमजोरी ब्रिटिश सत्ता के वर्चस्व को बनाए रखने की ही थी। वे सिर्फ अंग्रेजों की छवि बेहतर करने के लिए सक्रिय और चिंतित थे। लेकिन अंग्रेजों को लोकतंत्र का चैंपियन मानने वाले भारतीय बुद्धिजीवियों को अपनी बेशर्मी ढंकने के पहले इन तथ्यों को देखना चाहिए। 29 जून 1857 को बंगाल सरकार के सचिव ने गजट के मुद्रक और प्रकाशक जे.सी. मुरे को चेतावनी देते हुए भारत सचिव की शिकायत का उल्लेख किया था। अर्चना रूपेश ने लिखा है कि ''फ्रैंड ऑफ इंडिया के 25वें अंक में 'द सेंटनरी ऑफ प्लासी' शीर्षक प्रकाशित एक लेख के अंतिम दो अनुच्छेदों में तथ्यों के साथ शरारतपूर्ण छेड़छाड़ की गई है, जो वास्तविकता से परे हैं।'' इस लेख के प्रकाशित होने के बाद अंग्रेजी शासन की त्यौरियां सबसे पहले उन लोगों

पर चढ़ गईं, जो नया प्रिंटिंग प्रेस लगाने के लिए लाइसेंस या सरकारी अनुमति की बाट जोह रहे थे। आगे उन्होंने 1857 को लेकर पारित कानून सं. 115 की चर्चा की है। इसके तुरंत बाद जो प्रतिबंध विधेयक पेश किया गया, उसके अध्यक्षीय भाषण में लार्ड कैनिंग का कथन इस प्रकार उद्धृत किया है-

''मुझे इस बात की कोई खुशी नहीं है कि उन्हें संबोधित कर रहा हूं, जो जनता से जुड़े मामलों को अच्छी तरह समझते हैं। पश्चिमोत्तर प्रांतों और कुछ अन्य जगहों पर बंगाल आर्मी की विभिन्न रेजिमेंटों द्वारा किया गया विद्रोह असम में कुछ-कुछ शरारती लोगों द्वारा अराजकता फैलाने का प्रयास है। यह दुष्प्रयास कितना प्रभावी होगा, मैं इसकी गहराई में नहीं जाना चाहता। इसमें कुछ स्थानीय अखबारों का भी हाथ है, जिन्होंने बड़ी ही कलात्मक चतुराई और समझ-बूझ के साथ तथ्यों को तोड़-मरोड़कर प्रकाशित किया है। शरारती तत्व इस मौके का फायदा उठाकर अपना उद्देश्य पूरा करने के लिए दिल्ली और अन्य इलाकों में हुए बलवों की खबरों को गलत ढंग से प्रकाशित कर रहे हैं।''

1857 की राजक्रांति के समय बंगला और हिंदी में छपने वाला पत्र समाचार *सुधावर्षण* के संपादक श्यामसुंदर सेन ने बहादुरशाह जफर का फरमान प्रकाशित कर दिया। गवर्नर जनरल लार्ड कैनिंग ने 13 जून 1857 को 'एडम्स ऐगुलेशन' एक्ट बनाकर समाचारपत्रों पर पाबंदी लगा दी। इस तरह इस पत्र के अलावा दो फारसी साप्ताहिक *दूरबीन* और *सुल्तान-उल-अखबार* के संपादकों-अहमद अली और मुहम्मद ताहिर पर भी मुकदमा हो गया। इन दोनों ने माफी मांग ली, लेकिन श्यामसुंदर सेन ने बहस कराई। लंबी बहस के बाद पांचवें दिन फैसला आया कि तकनीकी रूप से भारत का बादशाह बहादुरशाह जफर ही है, इसलिए उसका फरमान छापना राजद्रोह नहीं हो सकता। इससे अंग्रेजों की सत्ता ही गैरकानूनी हो गई। उस समय के बहुत सारे अंग्रेज संपादक देशी पत्रों पर पाबंदी के लिए कैनिंग पर दबाव बना रहे थे। उनका यह भी मानना था कि विप्लव कैनिंग की उदारता के कारण ही बढ़ रहा है। श्यामसुंदर सेन अपने पत्र में 1857 संबंधी समाचार पूरी निर्भीकता से प्रकाशित करते थे। जब अंग्रेजों ने नागपुर के भोंसले राज्य को हड़प लिया तो *समाचार सुधावर्षण* के 18 मई 1855 में छपा **नागपुर की बात**-

''हम लोग के गवरनर जेनरल लार्ड डलहौसि ने नागपुर राज्यापहरण कर राजराणियों को गहना ओ सब खजाना लूट लाके कलकत्ता महानगर के तोषक खाने में रखा है। हेमलटन कंपनी के साहेबान लोग स्पष्ट रूप से समाचार-पत्रों में विज्ञापन देके उनके पदार्थों के निलाम करके बेचने का समय सभी को जनावेंगे। और एक विशेष बात सुनने में आई है कि नागपुर के महाराज की राणियां जिस महल में वास करती हैं, उन्ह को उस महल से निकाल के दूर कहीं और क्षुद्र स्थान में वास करवाने की इच्छा करते हैं और उस राजमंदिर में कमिश्नर साहेब को वास करने की अनुमति देने वाले हैं। लेकिन यिह बात सत्य है कि नहीं तो हम लोग नहीं कर सकते हैं। अगर यह बात सत्य है तो ब्रिटीश गवर्णमेंट ने भारतवर्ष निवासी राजयों पर अन्याय अत्याचार ओ जोरावरी करने का जो आरंभ किया है सो अब उसका हद हो चुका, काहे से कि धन गहना ओ कपड़ा लूट के फेर बैठने का झोपड़ा भी छीनने का जब इरादा किया, इससे अधिक जोरावरी और क्या करनी होती है? नागपुर राज्य पर जितना बलातकार किया, ऐसा कोई और राज्य पर इतना बल प्रकाश नहीं किया। क्या अत्याचारी हत्यारे नवाबों से नागपुर के महाराज ने इंग्रेजों पर बड़ा दुराचार किया था?''

1857 की राजक्रांति की कैसी जबर्दस्त और व्यापक तैयारी चल रही थी, इसका आभास 27 सितंबर 1855 के अंक में 'वरिशाल के पत्र का समाचार' शीर्षक खबर से मिलता है। यह एक बहुत बड़ा साक्ष्य भी है कि किस तरह इसकी तैयारी चल रही थी और भारतीय जनमानस की कैसी भावना थी!

''हाय, क्या सर्वनाश होने का समाचार सर्व देश से आता है। एक तो पहाड़ियों का उपद्रव चारों ओर मच रहा है, उसके मारे सब लोग बड़े दु:खी हो रहे हैं। इस दु:ख के सिवाय प्रजा के पक्ष में और भी एक प्रकार के अत्याचारियों का उपद्रव वरिशाल में उपजने वाला है, ऐसा सुनने में आता है। वरिशाल से हम लोगों के मित्र ने वहां का समाचार लिख भेजा है कि वरिशाल में एक फकीर लाल ध्वजा लगाए हुए बांस को कंधे पर लेके सब लोगों के दरवाजे घुमता है। एक दिन अनेक लोगों के सम्मुख यह फकीर एक प्रकार की बात सुंदर रचना करके कहने लगा कि इस बखत इंग्रेजों पर चढ़ाई करने से ही अपने लोगों को जय मिलेगा, काहे से कि आजकल वे लोग क्रिमिया के युद्ध में बड़े व्याकुल हैं और इस बखत वे लोग हम लोगों के साथ नहीं लड़ सकेंगे। अगर वे लोग दो हजार सेना दल भेजेंगे तो उन्हन के विपक्ष हम लोग 42,000 सेना दल भेजेंगे। चलो हम लोग एकमता करके हथियार संपादन करें। अगर हर जाके मारा होने से भी हम